राजनीतिक संस्कृति - Dr. Akhlakh Ahmad

D.K. College, Dumraon

राजनीतिक संस्कृति किसी भी राजव्यवस्था की कार्यपद्धति को सुचारु रूप से समझने के लिए आवश्यक है। परम्परागत राजनीति विज्ञान जिसे "राष्ट्रीय राजनीतिक मनोविज्ञान", 'राष्ट्रीय चरित्र' कहा जाता था. उसे ही आधुनिक शब्दावली में राजनीतिक संस्कृति कहा जाता है। शब्दावली में ये परिवर्तन राज० विज्ञान में व्यवहारवादी एवं उत्तर-व्यवहारवादी उपागम का परिणाम है. जिसने राज०विज्ञान एवं समाजशास्त्र को नजदीक लाने व इनमें एकीकरण स्थापित करने का प्रयास किया है। समाजशास्त्र के साथ इसमें मनोविज्ञान का भी प्रभाव देखा जा सकता है।

राजनीतिक संस्कृति को समझने से पूर्व हमें संस्कृति को समझना आवश्यक है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री ई०बी० टाइलर के अनुसार ' संस्कृति एक जटिल समूह है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, आचार, कानून व प्रथा और ऐसी अन्य ~~किसी~~ चीजों, आदतों व क्षमताओं का समावेश होता है. जिसे मानव समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है।"

मैकाइवर और पेज के शब्दों में " संस्कृति हमारे नित्य-प्रतिदिन के रहन-सहन की प्रकृति, साहित्य, धर्म कला, मनोरंजन व उपयोग के बारे में हमारी अभिव्यक्ति है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से संस्कृति के सम्प्रत्यय के निम्न लक्षणों को देखा जा सकता है-

1. संस्कृति का स्वरूप सामाजिक है।
2. यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती है।
3. इसमें समयानुकूल परिवर्तन होते रहते हैं।
4. प्रत्येक समाज की ~~की~~ अपनी विशिष्ट संस्कृति होती है।

Scanned with CamScanner

राजनीतिक संस्कृति सामान्य संस्कृति का अभिन्न अंग है। यह राज. व्यवस्था एवं राजनीति से सम्बंधित व्यक्तियों के दृष्टिकोणों, मनोवृत्तियों, मूल्यों, विश्वासों, भावना एवं व्यवहार का योग है।

पाई के शब्दों में "राजनीतिक संस्कृति मनोवृत्तियों, विश्वासों व मनोभावों का योग है जो राजनीतिक क्रियाओं को अर्थ एवं सुव्यवस्था प्रदान करता है।" आमण्ड एवं वर्बा के अनुसार "राजनीतिक संस्कृति से तात्पर्य राज. व्यवस्था और इसके घटकों के प्रति विशिष्ट राजनीतिक अभिविन्यासों तथा मनोवृत्तियों से है।"

राजनीतिक संस्कृति के प्रकार - सर्वप्रथम आमण्ड एवं वर्बा ने अपनी पुस्तक "The civic culture" में राजनीतिक संस्कृति को तीन श्रेणियों में विभाजित किया -

1. संकीर्ण संस्कृति
2. प्रजाभावी संस्कृति
3. सहभागी संस्कृति

राजनीतिक संस्कृति के तीनों उपर्युक्त प्रकार वेबर के आदर्श प्रारूपों के समान है क्योंकि वास्तव में इनका विशुद्ध रूप कम पाया जाता है और मिश्रित रूप अधिक पाया जाता है।

1. संकीर्ण संस्कृति - यह संस्कृति प्रायः परम्परागत एवं सरल समाजों में पायी जाती है। इसमें राज. व्यवस्था के प्रति नागरिकों के अभिविन्यास काफी दुर्बल होते हैं। न तो वह स्वयं को राष्ट्रीय राज. संस्थाओं, राष्ट्रीय प्रश्नों व राजनीतिक नीतियों से सकारात्मक रूप में न तो जोड़ने का प्रयास करते हैं और न ही स्वयं को इन्हें प्रभावित करने के योग्य मानते हैं। कुछ स्तर तक यह स्थानीय, जनपदीय अथवा ग्रामीण राज. में भाग लेते हैं। इस प्रकार की संस्कृति में कार्य विशेषीकरण का अभाव पाया जाता है। सामान्यतः व्यक्ति राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक भूमिकाओं को एक साथ निभाता है।

[illegible]

2. प्रजाभावी संस्कृति - इस प्रकार की संस्कृति में नागरिक राज. व्यवस्था से अवगत होते हैं। इनका समर्थन या विरोध भी करते हैं, परंतु इन नागरिकों में राजव्यवस्था को प्रभावित करने की क्षमता कम होती है। यह आगत को तो प्रभावित कर पाते हैं परंतु निर्गतों को बहुत अधिक प्रभावित नहीं कर पाते।

3. सहभागी संस्कृति - इस प्रकार की संस्कृति में नागरिक सक्रिय रूप से सक्रिय भूमिका निभाते हैं। यह राज. व्यवस्था से अधिक अवगत होते हैं, भले ही उनके विचार राज. व्यवस्था के पक्ष या विपक्ष में हो। विकसित देशों में इस प्रकार की संस्कृति पायी जाती है।

इन तीनों संस्कृतियों में यह आवश्यक नहीं है कि सभी नागरिक राजव्यवस्था के प्रति एक ही प्रकार का अभिविन्यास रखें।

आमण्ड एवं वर्बा ने इन तीन आदर्श प्रतिरूपों के अतिरिक्त चार मिश्रित प्रकार की संस्कृतियों का उल्लेख किया है -

i. संकीर्ण प्रजाभावी संस्कृति
ii. प्रजाभावी - सहभागी संस्कृति
iii. संकीर्ण सहभागी संस्कृति
iv. नागरिक संस्कृति

<u>संकीर्ण प्रजाभावी संस्कृति</u> - इसमें नागरिकों के राजनीतिक संस्थाओं के प्रति दृष्टिकोण और निष्ठाएँ विकसित होने लगती हैं। इसमें भी राजनीति को प्रभावित करने की भावना दुर्बल ही रहती है। नागरिक राजनीति को प्रभावित करनेवाले साधनों के प्रति अनभिज्ञ रहता है। यह प्रायः राजतंत्र में पाया जाता है।

प्रजाभावी सहभागी संस्कृति - इस प्रकार की संस्कृति में नागरिकों का एक महत्वपूर्ण भाग राज० व्यवस्था के प्रति अवगत एवं सक्रिय होता है जबकि कुछ नागरिक उदासीन होते हैं। जागरूक नागरिक राज० व्यवस्था के प्रति सकारात्मक विचार रखते हैं तथा उनमें राज व्यवस्था को प्रभावित करने की भावना भी अधिक होती है। एक साधारण नागरिक समझता है कि उसे सक्रिय एवं सहभागी होना चाहिए, फिर भी उसके लिए राज व्यवस्था में हिस्सा लेने के अवसर कम होते है। 19वीं शताब्दी के पश्चात फ्रांस, जर्मनी, इटली आदि देशों में इस प्रकार की संस्कृति देखी जा सकती है।

संकीर्ण सहभागी संस्कृति - इस प्रकार की संस्कृति उन देशों में पायी जाती है जहाँ पर सेनाओं और अधिकारियों के हाथ में सत्ता होती है। जनता को सम्मेलनों, राष्ट्रवादी अपीलों तथा सर्वदलीय चुनावों में सहभागिता के लिए सरकारी रूप से प्रेरित किया जाता है जिससे राज व्यवस्था की वैधता स्थापित हो। लेकिन जनपदीय एवं स्थानीय स्तर पर भागीदारी संकीर्ण रहती है।

नागरिक संस्कृति - ब्रिटेन एवं अमेरिका में इस प्रकार की संस्कृति पायी जाती है। नागरिकों में राज० प्रभावीता भावना अधिक होती है अर्थात नागरिकों की राजनीति को प्रभावित करने की क्षमता अत्यधिक होती है साधारणतः सरकार का हर मामले में विरोध नहीं होता। नागरिक सक्रिय है और राजनीतिक जीवन में उसकी ~~रुचि~~ रुचि अनिवार्य है। गैर - राजनीतिक संस्थाओं में

भी नागरिकों की रुचि होती है। इस प्रकार की संस्कृति में तीनों प्रकार की विशुद्ध संस्कृतियों के लक्षण पाये जाते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि राजनीतिक संस्कृति एकीकृत नहीं होती अर्थात समाज के विभिन्न वर्गों में राजव्यवस्था के प्रति अलग-अलग दृष्टिकोण पाये जाते हैं।

Dr. Akhlakh Ahmad
(Assistant professor)
Deptt. of Pol. Sc.
D.K. College, Dumraon.